85	गएडोलः कवल-	
86	स्तृते वाद्यातमुन्हिताशिताः।	
87	तृप्तिः सीव्हित्यमाघ्राण-	
88	मथ भुक्तसमुद्धिकते ॥ ४२६ ॥	
89	फेला पिएडोलिफेली च	
90	स्वादरपूरके पुनः।	
91	कुत्तिंभिरिरात्मंभिरिरहर्भिरिर-	- 11
92	व्यथ ॥ ४२० ॥	
93	म्रायूनः स्यादीदिशिको वितिगीषाविवितिते। तालान्य लिल	
94	उद्रिपिणाचः सर्वान्नीनः सर्वान्नभत्तकः ॥ ४२८ ॥	
95	शाष्कुलः पिशिता-॥कामक सम्बाहिक क्रमिक स्वामक	
96	श्युद्मदिन्नुस्तूद्माद्संयुतः। सम्बद्ध	
97	गृधुस्तु गर्धनस्तृत्विग्लिप्सुर्लुब्धा अभिलाषुकः ॥ ४२६ ।	
98	लालुपा लालुभा	81
99	लोभस्तृत्वा लिप्सा वशः स्पृक्ता	
1	काङ्गाशंसागर्धवाञ्काशेच्छेकातृद्यानार्याः ॥ ४३० ॥	
2	कामा अभिलाषा ।।।।। प्रिमिनिक्ट कुनातिनी	15
3	अभिध्या तु पर्स्वेन्हा- महामञ्जन्मध्यापि निम	22
4	une unbelieble (2 W. 2) mussible de W. 2) missible de W. 2) missib	
86. Satt (4 W.). — 87. Sattheit (3 W.). — 88. 89. Speise-Ueber-		
bleibsel (4 W.) 90. 91. Gefrässig (3 W.) 92. 93. Unenthalt-		

86. Satt (4 W.). — 87. Sattheit (3 W.). — 88. 89. Speise-Ueberbleibsel (4 W.). — 90. 91. Gefrässig (3 W.). — 92. 93. Unenthaltsam im Essen (2 W.). — 94. Der keine Speise verschmäht (3 W.). — 95. Fleischesser (2 W.). — 96. Toll, besessen. — 97. 98. Gierig (8 W.). — 99—2. Begierde, Verlangen (16 W.). — 3. Begehren nach fremdem Gute. — 4. 5. Ungezogen (2 W.).